MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY,AJMER

Format for Outline of Proposed Research work

(to be supplied in Six copies)

1. Nameof Scholar (In English) **BHAGWAN SAHAY SHARMA**

(In Hindi) भगवान सहाय शर्मा

2. Title of the Research Work :

(In English) **RELIGION, PHILOSOPHY AND CONCERN IN DADUPANTHIS POETRY**

(In Hindi) दादूपंथी संतों के काव्य में भक्ति,दर्शन एवं सरोकार

3. Location **Page No.**

a. Institution/Department where the work is to be done

b. Geographical area of Investigation, if any. 1

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives. 2-4

5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.) 5-6

6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based on the review) 7-8

7. Major Hypothesis, if any. 9

8. Research Methodology. 10-11

9. Chapterwise Details Of Propose Research 12

9. List of References cited. 13-14

Signature of the Candidate with date

Bhagwan 8/9/2016

....

Outline Approved.

Name and Signature of supervisor with date & seal.

Asha Rani 8/9/2016

(डॉ. आशा रानी)

व्याख्याता

राजकीय कन्या महाविद्यालय,

अजमेर

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध का परिचयात्मक महत्व, उद्येश्य
(Introduction Impartance of Proposed Investigatin,Objectives)

दादूपंथ संत सम्प्रदाय के अन्तर्गत आता है इसकी स्थापना संत दादूदयाल ने की थी। इस सम्प्रदाय ने धर्म सुधार व समाज सुधार के महत्वपूर्ण कार्य किये। दादूपंथ नें हिन्दु धर्म के उन मूल सिद्वान्तो को अपनाया जो इस्लाम के कतिपय सिद्वान्तो के भी अनुकुल रहे। इन्होने उस परमतत्व की बात की जो सगुण निर्गुण से परे है। यह कबीर की तरह कटु नहीं अपितु प्रेम पूर्वक व्यवहार के पक्षधर थे। दादू के बारे में हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते है **"दादू स्वभावतः सरल व निरीह होने के कारण समाज के लिए ज्यादा सहज व पुरअसर हो सके। दादू को मैदान बहुत कुछ साफ मिला उनके मीठे स्वभाव नें आश्चर्यजनक असर पैदा किया यही कारण है कि दादू को कबीर की अपेक्षा अधिक शिष्य और सम्मानदाता मिले।"** दादूपंथ में दादूदयाल के अलावा सुन्दरदास, जगन्नाथदास, रज्जब जैसे अनेक संत हुए है जिन्होने दादूपंथ के सिद्वान्तो को आगे बढाया।

निर्गुण सम्प्रदाय विश्व सम्प्रदाय है और इसका धर्म है विश्व धर्म। इस विश्वधर्म का मूलाधार है सभी जीवों से प्रेम, हदय की पवित्रता एवं सात्विक आचरण। एसे मूलभुत गुणों को आधार बनाकर ही निर्गुण सम्प्रदाय आगे बढा एवं निर्गुण धर्म का वृहत रूप ग्रहण किया। दादूपंथ भी निर्गुण सम्प्रदाय मे ही आता है।

दादूदयालः–

इश्क अल्लाह की जाति है , इश्क अल्लाह का अंग ।

इश्क अल्लाह मौजुद है , इश्क अल्लाह का रंग ।।

दादूपंथी साधकों की कई अवधारणाएं है जिनसे हमारी दृष्टि प्रभावित हो सके और हम उसके आधार पर अपना सम्बन्ध परमात्मा से जोड ले। दादूदयाल जैसे संत इतने प्रभावी है कि दादू की अमृतमयी वाणी के प्रभाव में अकबर नें गोहत्या बन्दी का फरमान जारी किया और उनकी प्रशंसा में कहा –

दादू नूर अल्लाह है,

दादू नूर खुदाय।

दादू मेरा पीव है,

Scanned by CamScanner

कहै अकबर शाह।।

दादूपंथी सन्तो नें मनुष्य के भीतर सोई मनुष्यता को जगाने का कार्य किया है, वास्तव में इन्होने मानव जीवन के बीच छोटी–छोटी इकाइयों को छोटी नहीं अपितु मनुष्य की गरिमा से मण्डित करके देखा है। दोनों ही सम्प्रदायों ने भटके हुए मानव को राह दिखाकर ईश्वर प्राप्ति का सही मार्ग प्रशस्त किया है। अतः दादूपंथियो की इसी विचारधारा को विश्लेषित करने का हमारा दायित्व बना रहेगा।

दादूपंथी सन्तो द्वारा हिन्दु मुस्लिम एकता के लिए प्रयत्न किये गये। स्वयं दादू कहते है –

दादू न हम हिन्दु हो हिंगे, ना हम मुसलमान ।

षट् दरसन में हम नही, हम राते रहिमान।।

दोनो भाई हाथ पग, दोनो भाई कान।

दोनो भाई नैन है, हिन्दु मुसलमान ।।

दादूपंथियों ने इस कार्य को धार्मिक अभिन्नता के प्रतिपादन द्वारा सम्पन्न करना चाहा। एसे में हिन्दु–मुस्लिम एकता की दृष्टि से इस शोध का महत्व होगा।

दादूपंथियों द्वारा प्रेम के महत्व को सहर्ष स्वीकार किया है। इस संबंध में नायक–नायिका के मिलन के माधुर्य भावापन्न वर्णन सन्त दादू की वाणी में शत्–शत् धाराओ में फूट पड़े है–

दादू मेरा पीव सौं , एक सेज सुख सोई।

गहिला लोग न जाणहि , पचि–पचि आपा खोई ।।

व

सुन्दरि को साईं मिल्या, पाया सेज सुहाग।

पीव सौ खेले प्रेम रस , दादू मोटे भाग।।

इस दृष्टि से यह शोध प्रेम के महत्व को समझाने में अवश्य ही सहायक सिद्ध होगा।

अतः दादूपंथी अवधारणा जैसे विषय पर शोध कर सामाजिक द्वैष, अलगाववाद, जातिवाद का अन्त किया जा सकता है और आदर्श समाज संगठित कर राष्ट्र व सुखी समाज की कल्पना की जा सकती है। परन्तु इसके लिए सामाजिक–धार्मिक सद्भाव, सहिष्णुता और प्रेम का प्रसार अति आवश्यक है। अतः

Scanned by CamScanner

इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए **"दादूपंथी संतों के काव्य में भक्ति,दर्शन एवं सरोकार"** जैसे शोध विषय का चयन करना एक आदर्श और सुखी सम्पन्न राष्ट्र के लिए एक अच्छा प्रयास सिद्ध हो सकता है।

Scanned by CamScanner

उद्येश्य

(Objectives)

कोई भी कार्य निरूद्येश्य नहीं होता, हर कार्य किसी न किसी उद्येश्य की पूर्तता हेतु किया जाता है हिन्दी साहित्य व भारतीय समाज में दादूपंथी विचारधारा का विशिष्ट स्थान हैं। तत्कालीन वैश्विक समाज को इस पंथ के साधकों नें देखा एवं उस समय जो कुरूतियां समाज में व्याप्त थी, उनका विरोध कर मनुष्य का ध्यान प्रेम एवं माधुर्य के माध्यम से परमात्मा की और लगानें का मार्ग प्रशस्त किया । अतः प्रस्तावित शोध निम्न उद्येश्यों की पूर्तता हेतु किया जायेगा :–

1. साहित्य समाज का दर्पण होता है। जो कुछ समाज में घटित हो रहा है उसी का साहित्य में युगानुरूप चित्रण किया जाता रहा है। दादूपंथी संतो ने उस समय समाज में व्याप्त जाति–पाति, बाहयाडम्बर व ऊच–नीच के भेदभाव के पक्ष में नहीं थे। साथ ही हिन्दु–मुस्लिम एकता का प्रयास भी हमें इनमें देखने को मिलता हैं। अतः इस शोध के माध्यम से वर्तमान समाज में व्याप्त इन कुरूतियों को मिटाने का प्रयास इस शोध का उद्येश्य होगा।

" हिन्दु तुरक न जाणों दोई।

सॉई सबका सोई है , और न दूजा देखे कोई।।

कीट पतंग सवै जोनिन में, जल थल संगि समाना सोई।

पीर पैगम्बर देव दानव , मीर मलिक मुनि–जनकों मोहि।। "

2. सब जीवों में निर्वेरता रखना अर्थात मैत्रीभाव रखना दादूपंथियो के सिद्धान्तो की नींव है। अहंकार भाव एवं तन मन के विकारों का दूर करके, जीव मात्र के प्रति शत्रुभाव का त्याग करके, मैत्री और स्नेह भाव धारण करने की सीख दादूदयाल नें दी है।

आपा मेटे हरि भजै,

तनमन तजै विकार।

निर्वैरी सब जीव सूं,

दादू यहु मत सार।।

Scanned by CamScanner

अतः यह शोध दादूपंथी इस विचार धारा का प्रसार कर संसार में वैरभाव को भुलाकर प्रेम के प्रसार का एक अच्छा प्रयास होगा।

3. दादूपंथी संतो नें गुरू को सर्वोतम स्थान प्रदान किया है।

दादूदयाल द्वारा –

दादू सतगुरू ऐसा कीजिए, राम रस माता।
पार उतारे पलक में , दरसन का दाता।।

इनके अनुसार गुरू ही हमें ईश्वर प्राप्ति का सही मार्ग प्रशस्त करता है। एसे में इस शोध के माध्यम से वर्तमान में कम होती गुरू की महता को आदरणीय स्थान दिलाने का प्रयास भी इस शोध का उद्येश्य होगा।

4. इस शोध का उद्येश्य काल प्रवाह के साथ परिवर्तित जीवन मूल्यों का चित्रण, भारतीय संस्कृति एवं समाज के अनुरूप समन्वित जीवन दृष्टि को देखना और बदलते भौतिकवादी परिवेश में जीवन मूल्यों का महत्व बनाये रखना है।

निम्न उद्येश्यों को लेकर चलने पर प्रस्तुत शोध पत्र हिन्दी में एक अच्छा प्रयास होगा। आशा हैं यह शोध **"दादूपंथी संतों के काव्य में भक्ति,दर्शन एवं सरोकार"** हिन्दी साहित्य व समाज में एक नयी दृष्टि का उद्घाटन करेगा।

Scanned by CamScanner

अनुसंधान कार्य का पुनरावलोकन

Review (Work already done on the subject of proposed Research Study)

प्रत्येक युग में लिखा गया श्रेष्ठ साहित्य उस युग का दर्पण होता है एवं यथासमय प्रचलित कुरूतियों को सुधारनें का प्रयास कर, मानव को सही राह दिखाने का कार्य हर युग के श्रेष्ठ साहित्य में किया जाता रहा है। जैसा कि प्रस्तावित अध्ययन **''दादूपंथी संतों के काव्य में भक्ति,दर्शन एवं सरोकार''** है। चुंकि दादूपंथी साहित्य भक्ति कालीन विषय रहे है तो जाहिर है इन विषयों पर पूर्व में भी अनेक दृष्टियों से शोध कार्य किया जाता रहा है। अतः यहां ऐसे विषयों पर पूर्व मे हुए अनुसंधान के पुनरावलोकन का प्रयत्न किया जायेगा।

अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय से शोधार्थी गुलनाज उस्मान द्वारा ''संत दादू का काव्य सम्पादन'' नामक विषय लेकर शोध कार्य किया जिसके अन्तर्गत सन्त दादूदयाल के काव्य का विभिन्न सन्दर्भो में अनुशीलन किया गया।

शोध के इस क्षेत्र में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल, विश्वविद्यालय, जौनपुर से रेनु यादव द्वारा ''सन्त काव्य में साम्प्रदायिक सद्भाव'' विषय पर शोध किया। जिसमें रेनु यादव नें विभिन्न सन्तो द्वारा अपने काव्य में साम्प्रदायिक सद्भाव की जो बातें कही उसे अपने शोध का विषय बनाते हुए शोध कार्य किया।

इनके अतिरिक्त सन्त काव्य में साम्प्रदायिक सद्भाव, सन्त एवं सूफी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन जैसे अनेक विषयों पर विभिन्न दृष्टियों से पूर्व में अनुसंधान कार्य किया गया है।

साहित्य के अन्तर्गत भक्तिकालीन विषय कोई नवीन विषय नहीं है जीवन को मूल्यपरक एवं साहित्य को श्रेष्ठ बनाने हेतु ऐसे विषयों का चयन किया जाता रहा हैं। हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत कई भक्तिकालीन विषयों पर अब तक शोध हुए है परन्तु **''दादूपंथी संतों के काव्य में भक्ति,दर्शन एवं सरोकार''** विषय पर महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर अथवा अन्य विश्वविद्यालयों में कोई भी शोध कार्य इस दृष्टिकोण से देखने मे नहीं आया है। अतः उपयुक्त विषय पर शोध कार्य करना शिक्षाविदों , शोधाथियों व समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध क्षेत्र में शोध अन्तराल का अभिज्ञान

Research Gaps Indentified in the proposed Fild of Investigation

(Based on the review)

अगर वर्तमान दौर में मानव–मानव के बीच की स्थिती को देखें तो यह बात अजीब सी लगती है, जब कहा जाता है कि आज संसार के बीच की दूरी मिट गयी है, और जिसे साहित्यिक भाषा में विश्वग्राम के रूप में रूपायित किया जाता रहा है। विश्व तो बडी इकाई ठहरी, आज के इस भौतिकवादी युग मे मानव–मानव के बीच दूरी मिटने के बजाय बढती जा रही है। इस दूरी के बढ़ने का प्रमुख कारण है प्रेम का अभाव, साथ ही सामाजिक व धार्मिक भेदभाव इसे बढाने का कार्य करते है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में मिडिया, विज्ञापन, बाजार, अपराध और राजनैतिक सत्ताओं द्वारा मानवीय व सामाजिक मूल्यों की अत्यधिक हानी इस वर्तमान दौर में हुई है। भूमण्डलीकरण के कारण आज जैसा तनाव का माहौल पैदा हो गया है उसे समझते हुए **"दादूपंथी संतों के काव्य में भक्ति,दर्शन एवं सरोकार"** जैसे विषयों पर शोध करके प्राचीन समय की तरह ही मानवीय मूल्यों की स्थापना का प्रयत्न किया जा सकता है।

एसे में प्रस्तुत शोधकार्य पूर्णतः मौलिक व नवीन होगा जिसको करने से वर्तमान में भटके हुए मानव को प्रेम भक्ति व दर्शन की सही राह प्रदान की जा सकेगी। वहीं प्रस्तुत शोध वर्तमान में शिक्षाविदों, शोधार्थियों , घर, परिवार, समाज व देश में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

Scanned by CamScanner

वृहत परिकल्पना
(Major Hypothesis)

इस शोधकार्य के अन्तर्गत दादूपंथी संतों की अवधारणाओं की खोज करके विभिन्न सन्दर्भों में प्रस्तुत किया जायेगा। जिसका मूल ध्येय दादूपंथीयों के सिद्धान्तो का प्रतिपादन करते हुए भारतीय उज्जवल संस्कृति, उदात्त एवं शाश्वत जीवन मूल्यों, विश्वबन्धुत्व की स्थापना करते हुए वर्तमान समय में मानव को प्रेम का महत्व समझाना हैं। यही प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य ध्येय व परिकल्पना होगी

इस शोध द्वारा सम्भवतः मनुष्यों में प्रेम व भाइचारे का प्रसार होगा। भक्ति व दर्शन को समझा जा सकेगा साथ ही विश्वबन्धुत्व की स्थापता भी होगी।

Scanned by CamScanner

शोध प्रविधि

(Reasearch Methodology)

मूल ग्रन्थावलियों एवं विविध सहायक ग्रन्थो का संकलन जैसे–विभिन्न आलोचनात्मक पुस्तकें, सम्बन्धित शोध पत्र, सम्बन्धित राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी से प्राप्त जानकारी, विषय विशेषज्ञों से मिलकर, शोध संस्थानों में परिभ्रमण, विविध ग्रन्थो का अध्ययन, तुलनात्मक शोध विधि द्वारा विषय सामग्री का संकलन कर शोध कार्य को अग्रेसित किया जायेगा।

प्रस्तावित शोध में एतिहासिक, समाजशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक शोधपद्धतियों का उपयोग किया जायेगा। दादूपंथी संतो के पदों का विश्लेषण करते समय विविध पहलुओं को रेखांकित करते हुए इनके द्वारा दिए गये सन्देश को समाज के सामने लाने का प्रयास इस शोध में होगा।

अनुसंधान के नियमों की प्रस्तावित शोध में पालना करते हुए यह प्रयत्न किया जायेगा कि विषय को निःसंधिग्द व प्रमाणिकता के साथ उपस्थित किया जाये।

1. दादूपंथी अवधारणाओं का प्रतिपादन धार्मिक, सामाजिक व नैतिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए किया जायेगा। मूल तथ्यों को अन्तः साक्ष्य एवं सन्दर्भित पुस्तकों के आलोक में परिक्षण करते हुए शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किये जायेंगे।
2. **शोध कार्य हेतु अनुमानित कार्य अवधिः–** शोध कार्य 2 वर्ष अर्थात 24 माह की अवधि में शोधविधि तथा प्रविधियों सहित पूर्ण होने की आशा की जाती है। उक्त शोधकार्य का अवधिवार नियोजन इस प्रकार है – उक्त गवेषणा की न्यूनतय अवधि 18 माह, समायोजन एवं विश्लेषण 3 माह, संशोधन, टंकण, लेखन आदि कार्य 3 माह अनुमानित है।
3. **शोध कार्य हेतु उपलब्ध सुविधाएं :–** इस शोध कार्य के निष्पादन में मैं दादूपीठ नरैना व आमेर में रखे मूल ग्रन्थों व सम्बन्धित ग्रन्थो का अध्ययन, राजस्थान की राजधानी जयपुर में स्थित पुस्तकालय राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, डॉ. राघाकृष्णन् राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय जयपुर, पुस्तकालय राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय बान्दरसिन्दरी, अजमेर स्थित पुस्तकालय, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के पुस्तकालय एवं समय–समय पर आवश्यक्तानुसार विभिन्न शिक्षण संस्थानों तथा इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री का सहयोग अपेक्षित है।

Scanned by CamScanner

4. **शोधार्थी के शोध संस्थान महाविद्यालय में पुस्तकालय की प्राप्त सुविधाः–** राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित राजकीय महिला महाविद्यालय अजमेर के पुस्तकालय दुर्लभ ग्रन्थो की अमुल्य निधि है। जंहा पर संत व सूफी साहित्य पर विविध पुस्तके पत्र पत्रिकाएं संग्रहित है।

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

विवरण	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय - भक्ति आन्दोलन व संत परम्परा	**1-55**
(1) भक्ति से तात्पर्य	
(2) सन्त काव्य परम्परा, विकास	
(3) प्रमुख सन्त एवं पंथ सिद्धान्त	
(4) प्रासंगिकता : वर्तमान समय में आवश्यकता	
द्वितीय अध्याय – दादूदयाल एवं दादूपंथ	**56-96**
(1) जन्म तिथि	
(2) जन्म स्थान	
(3) माता-पिता	
(4) जाति	
(5) गुरु	
(6) शिक्षा	
(7) गृहस्थ जीवन	
(8) यात्राएँ एवं साधना	
(9) दादू वाणी परिचय	
(10) व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन	
(11) दादूपंथ : उद्भव और विकास	
(12) दादूपंथी रचनाकार	
तृतीय अध्याय – दादूपंथी काव्य में भक्ति चेतना	**97-139**
(1) आध्यात्मिक चेतना	
(2) दार्शनिक चेतना	
(3) राम का स्वरूप	
(4) दादूवाणी का साधना-पक्ष	

Scanned by CamScanner

चतुर्थ अध्याय – दादूपंथी काव्य में दार्शनिक दृष्टि **140-197**

(1) ब्रह्म का स्वरूप
(2) जीव का स्वरूप
(3) माया का स्वरूप
(4) जगत का स्वरूप
(5) योग का स्वरूप
(6) प्रेम और विरह का स्वरूप

पंचम अध्याय – दादूपंथी काव्य में सरोकार **198-258**

(1) धार्मिक सरोकार
(2) सामाजिक सरोकार
(3) सांस्कृतिक सरोकार
(4) दादू काव्य में मानव मूल्यबोध

षष्ठ अध्याय – दादूपंथी काव्य का शिल्प विधान **259-292**

(1) भाषा-शैली
(2) प्रतीक योजना
(3) छन्द योजना
(4) अलंकार योजना
(5) रस योजना

सप्तम अध्याय – उपसंहार **293-300**

(1) उपलब्धि और संभावनाएँ

संदर्भ-ग्रन्थ सूची **301-310**

(अ) आधार ग्रन्थ
(आ) पत्र-पत्रिकाएँ
(इ) कोश
(ई) शोध पत्र

Scanned by CamScanner